महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद्
Mahatma Gandhi National Council of Rural Education
उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

Where there is Rural Wellbeing there is Universal Prosperity

एम.जी.एन.सी.आर.ई. की ओर से भारत को 76वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

द रुरल कनेक्ट

खंड 02 अंक 3
सितंबर 2022

नई शिक्षा नीति, सीखने के परिणाम आधारित पाठ्यचर्या की रूपरेखा, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा के हरित स्रोत – ध्यान केंद्रित
भारत 76वां स्वतंत्रता दिवस बड़े उत्साह और जोश के साथ मना रहा है!
हर घर तिरंगा - तिरंगा गर्व और सम्मान के साथ ऊंची उड़ान!

"दुनिया ने भारत की धरती पर समाधान खोजना शुरू कर दिया है। दुनिया की सोच में यह बदलाव हमारी 75 वर्ष की यात्रा का परिणाम है" *भारत के 76वें स्वतंत्रता दिवस पर देश को संबोधित करते हुए **प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी** ने कहा।*

उन्होंने कहा कि आकांक्षा, पुनः जागृति और विश्व की अपेक्षाएं त्रि-शक्ति हैं जिन्हें भारत को पूरा करने की आवश्यकता है। उन्होंने जिन असंख्य चुनौतियों का सामना किया, उनमें से उन्होंने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति एन.ई.पी. 2020 के बारे में जोरदार बात की। "मैं आशा के साथ देखता हूं कि जिस तरह से नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को विभिन्न लोगों के विचारों के आदान-प्रदान के साथ बहुत विचार-मंथन के साथ तैयार किया गया है। देश की शिक्षा नीति के मूल में है। हमने जिस कौशल पर जोर दिया है वह एक ऐसी शक्ति है, जो हमें गुलामी से मुक्त होने की ताकत देगी।" प्रधान मंत्री ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के महत्व के बारे में बात की, यह कहते हुए कि भारत अपने कार्बन पदचिह्न को कम करने और ऊर्जा के हरित स्रोतों, विशेष रूप से सौर ऊर्जा में अधिक निवेश करने के अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने देशवासियों से आग्रह किया कि नई संभावनाओं को पोषित करके, नए संकल्पों को साकार कर और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हुए 'अमृत काल' की शुरुआत करें।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. और अनुभवात्मक शिक्षा अब पर्यायवाची हैं - कौशल और व्यावसायिक शिक्षा – अग्रसर रास्ता – *एम.जी.एन.सी.आर.ई. के अध्यक्ष डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार ने कहा, क्योंकि उन्होंने संकाय विकास केंद्र एम.जी.एन.सी.आर.ई. परिसर में स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया*

था। उन्होंने एम.जी.एन.सी.आर.ई. की विशाल गतिविधियों का अवलोकन किया और आगे का मार्ग प्रशस्त किया। व्यावसायिक शिक्षा, अनुभवात्मक शिक्षा और कौशल और ग्रामीण प्रबंधन और व्यस्तता पर राष्ट्रीय कार्यशालाएं उस प्रतिबद्धता की मात्रा को बयां करती हैं जो एम.जी.एन.सी.आर.ई. की पाठ्यचर्या में सुधार लाने के राष्ट्रीय प्रयास के प्रति है, जिससे छात्रों को कुशल बनाया जा सके और उन्हें रोजगार के लिए तैयार किया जा सके।

"राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एन.ई.पी. 2020 के अनुरूप, विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक प्रमुख भूमिका निभाएगी"

श्री धर्मेंद्र प्रधान, केंद्रीय शिक्षा मंत्री और कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री ने जोर देकर कहा, क्योंकि उन्होंने 76 वें स्वतंत्रता दिवस पर देश को बधाई दी थी। "हमारा तिरंगा हमेशा ऊंचा उड़ता रहे। आइए हम सभी हर अवसर का लाभ उठाएं और अमृत काल में एक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हर संभव तरीके से योगदान दें।" श्री प्रधान ने नागरिकों से एक नया पाठ्यक्रम *(https://ncfsurvey.ncert.gov.in)* विकसित करने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए नागरिक सर्वेक्षण में भाग लेने का आग्रह किया। "एक जीवंत, गतिशील, समावेशी और भविष्यवादी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा वैश्विक दृष्टिकोण के साथ सांस्कृतिक-जड़ को एकीकृत करने, शिक्षा को औपनिवेशिक हैंगओवर से मुक्त करने और हमारी अगली पीढ़ियों में गर्व की गहरी भावना पैदा करने के लिए आवश्यक है।"

इससे पहले, श्री प्रधान ने ऑस्ट्रेलिया में शिक्षाविदों और ऑस्ट्रेलियाई शिक्षा और कौशल पारिस्थितिकी तंत्र के नेताओं और भारतीय प्रवासियों से मुलाकात की थी। उन्होंने शिक्षा और कौशल विकास में जुड़ाव, सहयोग और सहयोग के पहलुओं की खोज करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, "भारत में अभूतपूर्व अवसर पैदा करने के लिए सुधार, नवाचार और उद्यमिता एक साथ आ रहे हैं।" श्री प्रधान ने कहा कि एन.ई.पी. की शुरूआत ने भारतीय शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण का मार्ग प्रशस्त किया है। बाली, इंडोनेशिया में जी20 के चौथे शिक्षा कार्य समूह की बैठक और शिक्षा मंत्रियों की बैठक में, श्री प्रधान ने कौशल में सहयोग पर जोर दिया, जो पर्यटन, उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करेगा, यात्रा, पर्यटन, आतिथ्य और व्यवसाय के उभरते क्षेत्रों में क्षमता निर्माण में मदद करेगा और लोगों को- लोगों से जुड़ाव।

क्षमता, आत्मविश्वास, शक्ति!
एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता; और व्यावसायिक शिक्षा, अनुभवात्मक शिक्षा और कौशल पर 11 राष्ट्रीय कार्यशालाएँ पूरी कीं

एन.ई.आर.आई.ई. एन.सी.ई.आर.टी. शिलांग में अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. छात्रों के साथ बातचीत करते हुए

डॉ. डी एन दाश, सहायक निदेशक एम.जी.एन.सी.आर.ई. संकाय के साथ बातचीत करते हुए

कौशल को बार-बार अनुभव के साथ विकसित किया जाता है! भविष्य कक्षा में है! कौशल-आधारित शिक्षा प्रदान करने की योग्यता परिणाम है, न कि पाठ्यक्रम के अंत में हमारे पास कितना ज्ञान है।

संपादक की टिप्पणी

मैं अपने देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ! राष्ट्र मार्च 2021 से 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मना रहा है और यह 15 अगस्त 2023 तक जारी रहेगा। एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने देश भर में व्यावसायिक शिक्षा पर कई कार्यशालाओं और कार्यक्रमों का आयोजन और संचालन करके अमृत महोत्सव में योगदान दिया है। प्रतियोगिताएं आयोजित की गई और विजेताओं की घोषणा की गई हैं। 'आत्मनिर्भर भारत' के निर्माण का संकल्प एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा प्रतिध्वनित होता है क्योंकि परिषद संकाय और छात्रों के लिए कौशल, अनुभवात्मक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, ग्रामीण प्रबंधन, सामुदायिक व्यस्तता, सलाह, सुविधा, परामर्श, और संस्थागत सामाजिक उत्तरदायित्व पर जोर देने वाले कार्यक्रमों के संचालन की पथ-प्रदर्शक होड़ में है। यह देश में अनुभवात्मक शिक्षण शिक्षा का अग्रणी होने पर बहुत गर्व करता है। एन.ई.पी. 2020 में अनुभवात्मक शिक्षा का उल्लेख है जो एम.जी.एन.सी.आर.ई. के शिक्षा परिदृश्य पर पड़ने वाले प्रभाव को बयां करता है।

हमने 11 राष्ट्रीय कार्यशालाएं और 11 संकाय विकास कार्यक्रम (एफ.डी.पी.) पूरे कर लिए हैं। आगे के कार्यक्रम विचाराधीन हैं। पाठ्यचर्या सुधार के एजेंडे में भाग लेने और प्रयास में बहुत योगदान देने के कारण संकाय ने बहुत उत्साह दिखाया है। व्यावसायिक शिक्षा/कौशल घटक प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए आवश्यक है। हमें उन छात्रों को बाहर लाने की जरूरत है जो अपनी शिक्षा के अंत में रोजगार के योग्य हैं। हमें इस बात पर ध्यान देने की जरूरत है कि हमारी शिक्षा कक्षा में अंतिम प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति को क्या बना रही है, न कि टॉपर्स। एन.ई.पी. 2020 में सभी स्तरों पर व्यावसायिक शिक्षा घटक है। आइए हम संकाय की सरलता के आधार पर 25% पाठ वितरण को कौशल या व्यावसायिक घटक के साथ करने का प्रयास करें। बार-बार अनुभव के साथ कौशल विकसित होता है। बार-बार अनुभव कौशल प्रदान करता है। इसलिए प्रायोगिक अधिगम (सीखने का केवल एक उदाहरण) अनुभवात्मक अधिगम नहीं है। सीखने के परिणामस्वरूप सीखा गया कोई भी नया व्यवहार भी एक कौशल है। इसलिए हमें शारीरिक श्रम को अधिक महत्व देना चाहिए। एक डिग्री का मूल्य तभी होता है जब उसमें कौशल घटक शामिल हो।

हमें कौशल के संदर्भ में पाठ्यक्रम का पुनर्निर्माण करने की आवश्यकता है। ज्ञान क्षेत्र में है और क्षेत्र ज्ञान पाठ्य पुस्तक में है। हमें उस पर सहमत होने की जरूरत है। पूर्व ज्ञान को भी अब मान्यता दी जा रही है और ज्ञान का निर्माण छठी कक्षा से व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से किया जाना है। अद्वितीय और सार्वभौमिक पाठ्यचर्या पाठ्यक्रम का एक रणनीतिक प्रबंधन परिप्रेक्ष्य है। कौशल को चरणों में सावधानी के साथ उपकरणों का उपयोग करने में सक्षम बनाया जा रहा है। हमने कृषि से दूर जाने की गलती की। भाषा क्षमता भी नहीं बन रही है। हमें अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए भाषा कौशल की आवश्यकता होती है, इसलिए कार्य से संबंधित प्रत्येक संचार के लिए मातृभाषा की आवश्यकता होती है।

कृषि में सबसे अधिक रोजगार है और यह अगले 5 वर्षों तक समान रहेगा। हमें कृषि आधारित कार्य में 80% कौशल को शामिल करना चाहिए, फिर हम 80% रोजगार क्षेत्र में 80% छात्रों को पूरा करेंगे। शैक्षिक संस्थानों में सुलेख कौशल उपयोगी है; गांवों में इसकी जरूरत नहीं है। पाठ्यचर्या तैयार करते समय हमें शिक्षक की नहीं बल्कि छात्र की रुचि को ध्यान में रखना चाहिए। कौशल आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रम छात्रों की वर्तमान कौशल आवश्यकताओं को पूरा करता है। आने वाले वर्षों में शिक्षक से बहुत प्रयास करने की आवश्यकता है।

संकाय विकास कार्यक्रम में 2-दिवसीय फील्डवर्क/फील्ड विजिट घटक होता है जो उन्हें अधिक अनुभवात्मक बनाता है। ग्रामीण उच्चतर शिक्षा संस्थानों के लिए परामर्श और सुविधा कौशल एजेंडा का मूल है। एफ.डी.पी. का उद्देश्य भारत में उच्चतर शिक्षा संस्थानों से ऐसे संकाय सदस्यों को आमंत्रित करना है जो संस्थागत सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक व्यस्तता को बढ़ावा देने वाले अपने नेतृत्व कौशल के माध्यम से अपने संस्थानों में नवीन परिवर्तन लाने के इच्छुक हैं।

डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार
अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई.

भारत के 76वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देशवासियों को मेरी बधाई! मैं भारत की महान लचीला भावना को सलाम करता हूँ। प्रतिष्ठित शिक्षाविदों के साथ देश भर में ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता और व्यावसायिक शिक्षा, अनुभवात्मक शिक्षा और कौशल पर राष्ट्रीय कार्यशालाओं की एक श्रृंखला ने प्रतिभागियों के रूप में शिक्षा में कौशल विकास के लिए एम.जी.एन.सी.आर.ई. के कारण को दोहराया है। हमारे प्रयास एन.ई.पी. 2020 के अनुरूप रहे हैं। कार्यशालाओं में एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा पाठ्यक्रम विकास पहल के उत्साहजनक परिणाम सामने आए हैं। मल्टीपल एग्जिट और मल्टीपल एंट्री छात्रों को हर वर्ष एक अलग कॉलेज में स्विच करने की अनुमति देता है। जब तक हम अच्छी गुणवत्ता वाले पाठ्यक्रम नहीं देते, हम छात्रों को नहीं रोककर रख सकते। साथ ही, एक वर्ष के बाद, छात्र नौकरी करने के लिए पाठ्यक्रम छोड़ने के लिए स्वतंत्र हैं। सामुदायिक व्यस्तता कार्यक्रम को बहु-विषयक जुड़ाव दृष्टिकोण के साथ एकीकृत करना छात्रों को ग्रामीण क्षेत्र के सार्वजनिक और निजी डोमेन में उभरते और बढ़ते अवसरों का दोहन करने के लिए तैयार करेगा। सामाजिक उत्तरदायित्व और ग्रामीण प्रबंधन तकनीकों के साथ सामुदायिक व्यस्तता का अध्ययन छात्रों को पूर्ण, अच्छी तनख्वाह वाली नौकरियां प्रदान करेगा और एक जीवंत भविष्य का वादा करता है। जो छात्र सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और डिग्री स्तरों पर अध्ययन की इस पंक्ति को चुनते हैं, वे न केवल करियर का चयन कर रहे हैं, बल्कि अपने और समाज के लिए एक स्वस्थ जीवन शैली का चयन कर रहे हैं। सामुदायिक व्यस्तता पहल आज के युवाओं को समाज की सेवा करने और देश के ग्रामीण परिदृश्य पर व्यापक प्रगतिशील प्रभाव डालने के लिए सशक्त बनाएगी। आर.सी.आई. यू.बी.ए. समन्वयकों को शामिल करते हुए 2 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला समय के लिए उपयुक्त थी क्योंकि संकाय ने एन.ई.पी. 2020 के मल्टीपल एंट्री मल्टीपल एक्जिट मॉड्यूल में सामुदायिक व्यस्तता के अवसरों पर विचार-विमर्श किया।

डॉ भरत पाठक
उपाध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई.

चूंकि कृषि भारत में सबसे बड़ा व्यवसाय है, इसलिए हमें इस क्षेत्र में कई कौशल कार्यक्रमों की आवश्यकता है। हमारे पाठ्यक्रम में प्रौद्योगिकी उपकरणों को एकीकृत किया जा सकता है जैसे, ड्रोन प्रौद्योगिकी, फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले जानवरों का प्रबंधन कैसे करें, और प्रौद्योगिकी उपकरणों का उपयोग करना जो जानवरों को डराएंगे, कृषि, बागवानी, फूलों की खेती के क्षेत्रों में कौशल विकास पाठ्यक्रमों के साथ-साथ आधुनिक व्यवसायों को विकसित और एकीकृत करने की आवश्यकता है।
डॉ. दिनेश प्रसाद सकलानी, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी.

हमें एक सक्षम और कुशल कार्यबल तैयार करने के लिए पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। हमें स्थानीय कार्यबल के प्रति सम्मान वापस लाने की जरूरत है। व्यावसायिक शिक्षा, कौशल और अनुभवात्मक शिक्षा के लिए बहुत कुछ किया जाना है। हमें साइकोमोटर और अफेक्टिव डोमेन पर ध्यान देने की जरूरत है।
डॉ. पी.सी. अग्रवाल, प्राचार्य, आर.आई.ई., भुवनेश्वर

शिक्षा जो अनुभव से सीखी जाती है वह व्यावसायिक शिक्षा है। उदाहरण के लिए, कोविड के इलाज के लिए दादी-नानी द्वारा साझा किए गए घरेलू उपचारों का उपयोग करने का अनुभव महामारी के दौरान उपयोगी था। जीवन बचाने वाली वैक्सीन भी अनुभवात्मक सीख है। शिक्षा प्रणाली में सुधार की हमारी बहुत बड़ी उत्तरदायित्व है।
डॉ. दीपक पालीवाल, संयुक्त निदेशक, पी.एस.एस. सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ वोकेशनल एजुकेशन (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.)

कॉलेज में डमी प्रोजेक्ट छात्रों को जीवन की चुनौतियों से निपटना नहीं सिखाते हैं। मैं पाठ्यक्रम में प्रदान किए गए लचीलेपन और क्रेडिट ट्रांसफर के लिए एन.ई.पी. 2020 की सराहना करता हूँ जो छात्रों को पाठ्यक्रम लेने, किसी संस्थान में काम करने और उसी के लिए क्रेडिट लेने में सक्षम बनाता है। यह हमारे छात्रों के फलने-फूलने के लिए एक बहुत ही गतिशील सेट-अप है।
प्रो. वाई. श्रीकांत, प्राचार्य, आर.आई.ई., मैसूर

शिक्षा को एक व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से एक अच्छा इंसान बनने में मदद करनी चाहिए। उच्चतर शिक्षा को व्यक्तिगत विकास, रचनात्मक सार्वजनिक जुड़ाव और समाज में उत्पादक योगदान को सक्षम करना चाहिए। इसलिए हमें इस तरह की समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की प्राप्ति की दिशा में एन.ई.पी. 2020 द्वारा जोर दिए गए उच्चतर शिक्षा संस्थानों के माध्यम से सामुदायिक व्यस्तता को फिर से स्थापित करना होगा।

डॉ. वीरेंद्र के विजय, राष्ट्रीय समन्वयक, उन्नत भारत अभियान

हमें एन.ई.पी. 2020 को अपनाने और लागू करने, कौशल को नौकरी से जोड़ने, व्यावहारिक ज्ञान हासिल करने, अपने छात्रों को उद्योग के लिए तैयार करने की जरूरत है। हमारा अधिकांश उन्मुखीकरण पाठ्यक्रम को पूरा करने, परीक्षाओं को पूरा करने की ओर है। नया कौशल विकास विचार वर्तमान समय में बहुत प्रासंगिक है। यह कार्यशाला समय की आवश्यकता के लिए प्रत्यक्ष रूप से प्रासंगिक है।

प्रो. एस.बी. प्रसाद, कार्यवाहक वी.सी., स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज, नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग के डीन

राष्ट्रीय कार्यशालाएं

ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता - विभिन्न स्तरों पर सामाजिक कार्य और ग्रामीण प्रबंधन शिक्षा में विस्तार, मानकीकरण और सुधार के लिए रणनीतियाँ

ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता पर राष्ट्रीय कार्यशालाएं पहले जुलाई में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, यू.जी.सी. एच.आर.डी.सी. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे.एन.यू.) नई दिल्ली, अमृता विश्व विद्यापीठम कोयंबटूर और उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद में आयोजित की गई थीं। यू.जी.सी. एच.आर.डी.सी. गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी असम में राष्ट्रीय कार्यशाला 1 और 2 अगस्त को आयोजित की गई थी। शिक्षण, अनुसंधान और संकाय विकास के संबंध स्थापित करते हुए, बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन / बी.एस.डब्ल्यू. को कवर करने वाले उच्चतर शिक्षा संस्थानों के सामाजिक कार्य और प्रबंधन के संकाय के लिए उच्चतर शिक्षा संस्थानों के पाठ्यक्रम में ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता के एकीकरण / समावेश पर केंद्रित राष्ट्रीय कार्यशालाएं एन.ई.पी. 2020 द्वारा प्रस्तावित मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एग्जिट मॉडल के संदर्भ में सामुदायिक विकास पाठ्यक्रम, जिसमें 1 वर्ष का सर्टिफिकेट प्रोग्राम, 2 वर्ष का डिप्लोमा प्रोग्राम और 3 वर्ष का डिग्री प्रोग्राम शामिल है।

यू.जी.सी. एच.आर.डी.सी. गुवाहाटी विश्वविद्यालय
01-02 अगस्त

प्रो. प्रताप ज्योति हांडिक, कुलपति, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, मुख्य अतिथि के रूप में ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता पर राष्ट्रीय कार्यशाला में शामिल हुए। उन्होंने खेती की विभिन्न गतिविधियों में शामिल एक किसान के बेटे होने के अपने अनुभव को साझा किया। उन्होंने बताया कि कैसे कोई अपने अनुभवों से सीख सकता है और छात्रों को सही रास्ते पर ले जा सकता है। उन्होंने प्रतिभागियों को अपने क्षेत्र और विश्वविद्यालय जहां वे काम कर रहे हैं, में अपने छात्रों के लिए रोल मॉडल बनने का भी आग्रह किया।

मुख्य वक्ता, प्रो. वेंकट पुल्ला, भारतीय मूल के ऑस्ट्रेलियाई मानव सेवा प्रबंधन सलाहकार और प्रेरक वक्ता ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे विभिन्न स्तरों पर शिक्षा रोजगार या उद्यमिता की ओर ले जा रही है। उन्होंने पाठ्यचर्या की स्लाइसिंग, पाठ्यचर्या की डाइसिंग और इसके विभिन्न पहलुओं में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि दी। उन्होंने बोर्ड ऑफ स्टडीज (बी.ओ.एस.) के सदस्यों और संकाय को सुझाव दिया कि जो नहीं है उसकी तलाश करने के बजाय उस पर काम करें जो वहां है। एम्प्लॉयमेंट मार्केट इंटेलिजेंस (ई.एम.आई.) और लेबर एम्प्लॉयमेंट ट्रेनिंग (एल.ई.टी.) बी.ओ.एस. सदस्यों को पाठ्यक्रम को अपडेट करने में मदद करेंगे। कई निकास और प्रवेश विकल्पों के मामले में बी.ओ.एस. सदस्यों को छात्रों की प्राथमिकताओं की पहचान करनी चाहिए और उन्हें शिक्षा के मूल्यों को समझना चाहिए। उन्होंने सदस्यों से बौद्धिक कौशल पर ध्यान केंद्रित करने, स्थिति को समझने, शिक्षकों और छात्रों को प्रेरित करने और उन्हें जीवन में मूल्यों को समझने और उन्हें प्रेरित करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम से बाहर निकलना भी प्रवेश की तरह ही जश्न का होना चाहिए।

डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार, अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्देश्यों की शुरुआत की और एन.ई.पी. और मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एक्जिट मॉडल के बारे में बात की। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि ग्रामीण कार्य और ग्रामीण प्रबंधन के पाठ्यक्रम ऐसे विद्वान छात्र पैदा कर रहे हैं जिनके पास ग्रामीण क्षेत्र में काम करने के लिए कौशल की कमी है। उन्होंने कहा कि भारत में अधिकांश नौकरियां ग्रामीण क्षेत्र में हैं और इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षा क्षेत्र में आवश्यक कौशल और ज्ञान वाले छात्रों को तैयार किया जाए जो कई स्तरों पर बाहर निकल सकें और ग्रामीण उद्योग के लिए तैयार हों। भारत की लगभग 70% आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। सामाजिक कार्य और ग्रामीण प्रबंधन के पहलुओं को प्रदान करने से छात्रों का एक गतिशील पूल तैयार होगा जो ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता पर स्थायी प्रभाव डाल सकता है। सामाजिक कार्य और ग्रामीण प्रबंधन पहलुओं के साथ मजबूत पाठ्यक्रम ग्रामीण श्रम शक्ति की उत्पादकता में वृद्धि करेगा और नेतृत्व विभागों का विकास करेगा। अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने इस समय इस कार्यशाला की आवश्यकता के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने शिक्षण और छात्र समुदाय दोनों के लिए कठोर गतिविधियों के लिए पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकों, शिक्षण विधियों के महत्व पर बात की। "कार्यशाला का उद्देश्य एक पाठ्यक्रम तैयार करना है, जो स्थानीय स्तर पर गांव से गांवों के समूह से लेकर जिला स्तर तक मानवीय संबंधों के मुद्दों को संभालने की क्षमता का निर्माण करेगा," उन्होंने दोहराया।

डॉ. वेंकट पुल्ला ने सभी प्रस्तुतियों से निष्कर्ष निकालकर कार्यक्रम का समापन किया। उन्होंने कहा कि इन कोर्स में पाठ्यक्रम में बदलाव से छात्रों को उद्योग के लिए तैयार होना चाहिए। अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने कार्यशाला को एक वास्तविक अनुभवात्मक अधिगम की अभ्यास बनाने के लिए आयोजकों और प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया। दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के अंत में शिक्षकों को प्रतिभागिता प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय कार्यशालाएं

व्यावसायिक शिक्षा, अनुभवात्मक शिक्षा और कौशल - शिक्षक शिक्षा में पाठ्यचर्या सुधारों को लागू करने के लिए क्षेत्रीय टास्क फोर्स के निर्माण पर ध्यान केंद्रित

एन.ई.पी. 2020 ने स्कूल और उच्चतर शिक्षा के सभी चरणों में अनुभवात्मक शिक्षा, कौशल और व्यावसायिक शिक्षा के महत्व पर जोर दिया है। शिक्षक शिक्षा संस्थानों को अनुभवात्मक शिक्षा, कौशल और व्यावसायिक शिक्षा पद्धतियों को शामिल करने के लिए अपने पाठ्यक्रम को मजबूत करने की आवश्यकता होगी। यह उन शिक्षक प्रशिक्षुओं को कुशल बनाने में सक्षम होगा जिन्हें एन.ई.पी. 2020 सुधारों को लागू करने वाले स्कूलों में काम करने के लिए तैयार किया जा रहा है। मजबूत शिक्षण-अधिगम गतिविधियों के माध्यम से स्कूल स्तर पर शिक्षा को मजबूत करने की आवश्यकता है जो स्कूली छात्रों को शामिल करने की अनुमति देती है और सामुदायिक व्यस्तता को शामिल करते हुए अनुभवात्मक शिक्षा, कौशल और व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से अपने स्वयं के ज्ञान का निर्माण करती है, जो स्कूली छात्रों को हाथों से सीखने में मदद करेगी (साइकोमोटर डोमेन) जिससे हृदय (भावात्मक डोमेन) प्रभावित होता है और उनके सिर (संज्ञानात्मक डोमेन) में सामग्री (विषय ज्ञान) का नया अर्थ बनता है। इसके लिए हमें अपने शिक्षक शिक्षा संस्थानों से अच्छी तरह से प्रशिक्षित स्नातकों की आवश्यकता है।

बहु-विषयक दृष्टिकोण के साथ पाठ्यक्रम विकसित करने से छात्र देश के सार्वजनिक और निजी डोमेन में उभरते और बढ़ते अवसरों का लाभ उठा सकेंगे। एम.जी.एन.सी.आर.ई. का मानना है कि यह समय देश भर के अकादमिक पेशेवरों के लिए तालमेल बिठाने और छात्रों के लाभ के लिए एक गतिशील पाठ्यक्रम के लिए एक साथ आने का है। इस परिवर्तन को लाने के लिए केंद्रित कार्यबल के एक बड़े, प्रशिक्षित संवर्ग की आवश्यकता है। समावेशी विकास के लिए बाधाओं से ऊपर उठने और संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन करने की तत्काल आवश्यकता है।

व्यावसायिक शिक्षा, अनुभवात्मक शिक्षा और कौशल पर 2 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशालाएं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित 1 वर्ष को कवर करते हुए बहु प्रवेश और एकाधिक निकास मॉडल के संदर्भ में शिक्षक शिक्षा में डी. एड., बी. एड. और एम. एड. पाठ्यक्रम को फिर से तैयार करने पर काम करने का इरादा रखती हैं। सर्टिफिकेट प्रोग्राम, 2 वर्ष का डिप्लोमा प्रोग्राम, 3 वर्ष का डिग्री प्रोग्राम, 4 वर्ष का ऑनर्स प्रोग्राम और 1 वर्ष का एम.बी.ए. प्रोग्राम। व्यावसायिक शिक्षा और कौशल में संकाय विकास और लघु/प्रमुख अनुसंधान परियोजनाओं पर चर्चा की गई है।

कार्यशालाओं ने संस्थानों, शिक्षाविदों, पेशेवरों और अन्य प्रमुख हितधारकों को मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एक्जिट मॉडल के संदर्भ में डी. एड., बी. एड. और एम. एड. पाठ्यक्रम में विस्तार, मानकीकरण और सुधार के लिए रणनीतियों पर विचार-विमर्श करने के लिए एक साथ लाया। प्रतिभागियों को सामुदायिक व्यस्तता के माध्यम से अनुभवात्मक शिक्षा, कौशल और व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से शिक्षक शिक्षा में पाठ्यचर्या सुधारों पर चर्चा करने, तैयार करने और अपनाने के लिए उन्मुख किया गया था। इसका उद्देश्य छात्रों को सशक्त बनाना, उन्हें प्रतिस्पर्धी बनाना, एक क्षेत्रीय टास्क फोर्स बनाना है जो शिक्षक शिक्षा में पाठ्यचर्या सुधारों को लागू करने के लिए शिक्षक की शिक्षा क्षेत्र में सहायता, मार्गदर्शन और समर्थन करेगा, और क्षेत्र में चुनौतियों का समाधान करने के लिए अभ्यास ज्ञान का एक निकाय तैयार करेगा।

क्र.सं.	स्थान	वेन्यू	दिनांक
1	नई दिल्ली	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.)	05 और 06 अगस्त
2	मैसूर	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान एन.सी.ई.आर.टी.	10 और 11 अगस्त
3	भुवनेश्वर	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान एन.सी.ई.आर.टी.	17 और 18 अगस्त
4	भोपाल	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान एन.सी.ई.आर.टी.	24 और 25 अगस्त
5	शिलांग	यू.जी.सी. एच.आर.डी.सी. नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी	29 और 30 अगस्त

आदिकवि नन्नय्या विश्वविद्यालय
राजामहेंद्रवरम, आंध्र प्रदेश में संकाय विकास कार्यक्रम 22-27 अगस्त

अकादमिक नेतृत्व के लिए प्रबंधन विकास कार्यक्रम

डॉ. प्रो. एस. टेकी, प्राचार्य प्रभारी समुदाय को उत्पादक गतिविधियों में कैसे शामिल किया जा सकता है, एस.एच.जी. का गठन और माइक्रो फाइनेंसिंग के साथ कैसे काम किया जा सकता है, इस पर बात की। प्रतिभागियों की पूरी टीम ने दो गांवों - श्रीकृष्ण पटनाम और थुंगपाडु का दौरा किया।

यू.जी.सी. एच.आर.डी.सी. नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी
शिलांग 29-30 अगस्त

नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी (एन.ई.एच.यू.) में राष्ट्रीय कार्यशाला में मुख्य अतिथि प्रो. एस.बी. प्रसाद, कार्यवाहक कुलपति और स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज के डीन ने भाग लिया। "हमारा अधिकांश उन्मुखीकरण पाठ्यक्रम को पूरा करने, परीक्षाओं को पूरा करने की ओर है। नया कौशल विकास विचार वर्तमान समय में बहुत प्रासंगिक है," प्रो. एस.बी. प्रसाद ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा। उन्होंने एन.ई.पी. 2020 को अपनाने और समाज में ज्ञान के व्यावहारिक अनुप्रयोगों के साथ कौशल को जोड़ने, कौशल प्रशिक्षण व्यावहारिक अनुभव के साथ इस 2 दिवसीय कार्यशाला की प्रत्यक्ष प्रासंगिकता, कौशल विकसित करने के तरीके, रेशम उत्पादन मछली पालन पर शुरू किए जा रहे नए पाठ्यक्रम के बारे में भी बताया। उन्होंने प्रतिभागियों से इन पाठ्यक्रमों को गांवों तक ले जाने का आग्रह किया।

डॉ. डी.एन. दास, सहायक निदेशक, एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने स्वागत भाषण दिया और प्रतिभागियों की पृष्ठभूमि साझा की - उत्तर पूर्वी राज्यों के एस.सी.ई.आर.टी., डाइट और शिक्षा विभागों का प्रतिनिधित्व करते हुए। वर्क नॉट वर्ड, लेक्चर के बजाय प्रैक्टिस, हेड और हार्ट के साथ हैंड कोऑर्डिनेट ... प्रायोगिक से अनुभवात्मक की ओर बढ़ना एन.ई.पी. कहता है - हेड, हार्ट और हैंड का इस्तेमाल करना। एन.ई.पी. 2020 में एक ही सिद्धांत निहित है और वह है आधार के रूप में कौशल के साथ सीखना - समुदाय से जुड़ा हुआ है और कौशल सीखने के लिए कॉम करना है।

"अचेतन अक्षमता से अचेतन क्षमता तक ... कौशल-आधारित शिक्षा देने की योग्यता परिणाम है, न कि पाठ्यक्रम के अंत में हमारे पास कितना ज्ञान है", अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने सहित शिक्षक शिक्षा सहित उच्चतर शिक्षा में पाठ्यक्रमों के मल्टीपल एंट्री और एक्जिट मॉडल की शुरुआत करते हुए कहा।

धन्यवाद शब्द **डॉ. कुहेली विश्वास दास**, सहायक प्रोफेसर, यू.जी.सी.-एच.आर.डी.सी., एन.ई.एच.यू. द्वारा प्रस्तावित किया गया था। उन्होंने प्रो. प्रसाद को उनके प्रासंगिक और हालांकि कौशल क्षेत्रों और समाज की जरूरतों को पूरा करने के लिए नए पाठ्यक्रमों के उत्तेजक विचारों के लिए धन्यवाद दिया और सभी प्रतिभागियों को उनकी प्रतिक्रिया और समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कार्यशाला के लिए रसद और आतिथ्य समर्थन के लिए एन.ई.एच.यू. टीम को धन्यवाद दिया।

अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने ग्रेड VI से छात्रों को अपना शिक्षण करियर शुरू करने के लिए उन्हें कुशल बनाने में मदद करने के लिए शिक्षकों को तैयार करने के महत्व को साझा किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षण-अधिगम समय का केवल 25% पाठ्यक्रम के ज्ञान घटकों के लिए होना चाहिए, शेष कौशल आधारित होना चाहिए। केवल यह पद्धति छात्रों को आजीवन सीखने के कौशल और "सीखना सीखो" कौशल विकसित करने के लिए प्रशिक्षित करेगी क्योंकि हम स्कूल में छात्रों को नौकरियों के लिए तैयार कर रहे हैं जो अभी मौजूद नहीं हैं। समापन समारोह के मुख्य अतिथि **प्रो. हितेंद्र कुमार मिश्रा**, निदेशक यू.जी.सी.-एच.आर.डी.सी., एन.ई.एच.यू. ने प्रतिभागियों को उनके सार्थक विचार-विमर्श और प्रस्तुतियों के लिए बधाई दी।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

एन.सी.ई.आर.टी. भोपाल 24-25 अगस्त

"हमारे शिक्षकों को अपने छात्रों में बड़ों के प्रति सम्मान पैदा करने की जरूरत है और यह सम्मान रोजगार पैदा करने में ग्रामीण शिक्षा और ग्रामीण प्रौद्योगिकी के दायरे को बढ़ा सकता है। एन.ई.पी. 2020 में व्यावसायिक शिक्षा का नया पहलू यह है कि 2025 तक 50% शिक्षार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा से अवगत कराया जाएगा। यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। कई समान विचारधारा वाले संगठन इस पर काम कर रहे हैं। एम.जी.एन.सी.आर.ई. सभी आर.आई.ई. में जा रहा है और व्यावसायिक शिक्षा / कौशल को एकीकृत करने और छात्रों के लाभ के लिए व्यावसायिक शिक्षा, कौशल और नई तालीम को एकीकृत करने के बारे में शिक्षा के संकाय के साथ चर्चा करने पर अपने विचार साझा कर रहा है", मुख्य अतिथि ***डॉ. दीपक पालीवाल*** *ने जोर दिया, संयुक्त निदेशक, पी.एस.एस. केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.)।*

विशेष अतिथि **प्रो. जयदीप मंडल, प्राचार्य, आर.आई.ई. भोपाल** ने एम.जी.एन.सी.आर.ई. के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा, "एन.ई.पी. ने हमें व्यावसायिक शिक्षा और स्कूली शिक्षा के किन चरणों के साथ-साथ उच्चतर शिक्षा के अयस्क को एकीकृत करने के बारे में जानकारी दी है। यह एक बहुत बड़ी चुनौती है। यह असम्भव नहीं है। अगर हम सभी शिक्षाविद मिलकर काम करें तो यह संभव है। व्यावसायिक शिक्षा को स्कूली शिक्षा से कैसे जोड़ा जाए, इस पर हम कार्य योजना बना सकते हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण भी है। निरंतर प्रयासों से हम सफलता के साथ उभरेंगे।" प्रो. प्रवीण कुमार कुलश्रेष्ठ, प्रमुख, विस्तार शिक्षा विभाग, आर.आई.ई, भोपाल; और डॉ. एल.सी. चौहान, सहायक प्रोफेसर, आर.आई.ई., भोपाल, डॉ. राजीव कुमार पाठक, प्रो. और प्रमुख, कृषि और पशुपालन विभाग, पी.एस.एस.सी.वी.ई., डॉ. अभिजीत नायक, प्रो. और प्रमुख, स्वास्थ्य और पैरामेडिकल विभाग के साथ अन्य मुख्य वक्ता थे। विज्ञान, पी.एस.एस.सी.वी.ई., डॉ. पी. वीरैया, प्रोफेसर और प्रमुख, व्यवसाय और वाणिज्य विभाग, पी.एस.एस.सी.वी.ई., डॉ. जयश्री महापात्रा, सहायक प्रोफेसर, पी.एस.एस.सी.वी.ई., डॉ. सौरव प्रकाश, प्रो. और प्रमुख, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी विभाग, पी.एस.एस.सी.वी.ई., डॉ. एल.के. तिवारी , प्रोफेसर, आर.आई.ई., भोपाल, और डॉ. रमेश बाबू, प्रोफेसर, आर.आई.ई., भोपाल।

प्रतिभागियों को कार्यप्रणाली [विज्ञान, गणित, भाषा और सामाजिक अध्ययन] के आधार पर चार टीमों में बनाया गया था और शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम के लिए कौशल विकास गतिविधियों पर विचार-मंथन करने के लिए कहा गया था, जो उन्होंने अपने व्यक्तिगत प्रोफार्मा में सूचीबद्ध किया था। सभी प्रतिभागियों को भागीदारी प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। एम.जी.एन.सी.आर.ई. संकाय को स्किलिंग में माइनर और मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट्स के साथ आने का इच्छुक होगा, जिनमें से कुछ को एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा सपोर्ट किया जा सकता है। डॉ. अनिल कुमार दुबे, एम.जी.एन.सी.आर.ई. संसाधन व्यक्ति, ने कार्यवाही का समन्वय किया और निष्कर्षों का मिलान किया।

"हमें अपनी शिक्षा को एक वेस्टिब्यूल ट्रेन बनाना है, यानी एल.के.जी. में शिक्षा ट्रेन में चढ़ना है और पी.एच.डी. पर उतरना है और बीच में छात्र ट्रेन के विभिन्न निकासों पर उतर सकते हैं। लेकिन जो उतर जाता है वह मंच पर वास्तविकता के साथ की पहचान नहीं करेगा। यही वह अंतर है जिसे ठीक करने की आवश्यकता है" अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने कहा।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

एन.सी.ई.आर.टी. भुवनेश्वर 17-18 अगस्त

"कौशल आपको आत्मविश्वास देता है। कुशल व्यक्ति का सम्मान होता है। हम भी उन पर विश्वास करते हैं। उन्होंने चीजों को करने का कौशल विकसित किया है। हम एक कुशल शिक्षक का सम्मान करते हैं, जो दिल से आता है। यही कौशल की खूबसूरती है", एम.जी.एन.सी.आर.ई. के अध्यक्ष डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार ने शिक्षक शिक्षा सहित उच्चतर शिक्षा में पाठ्यक्रमों के मल्टीपल एग्जिट और एंट्री की शुरुआत करते हुए कहा। डॉ. डी.एन. दास, सहायक निदेशक एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने मुख्य अतिथि प्रो. एस.के. दास, प्राचार्य प्रभारी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.सी.ई.आर.टी.), भुवनेश्वर का परिचय कराया। *"मैं इस सभा में प्रसन्न और भावुक हूँ; हम में से ज्यादातर लोग ऐसे गांवों से हैं जहां व्यावसायिक माहौल है, जहां ग्रामीण खेती, मिट्टी के बर्तनों, बढ़ईगीरी आदि में लगे हुए हैं। गांवों में वस्तु विनिमय प्रणाली के माध्यम से अच्छे संबंध हैं। वहां के लोगों को उनके काम पर गर्व है। हम उस संस्कृति में पैदा हुए और पले-बढ़े, जो अब गायब है। हम दावा करते हैं कि हम शिक्षित हैं; ग्रामीणों के पास कोई औपचारिक शिक्षा नहीं है, लेकिन उनमें गर्व, संतुष्टि और एक साथी की भावना है। शिक्षा के साथ हम इन सभी मूल्यों को खो रहे हैं, ऐसी शिक्षा का क्या अर्थ है?"* प्रो. एस.के. दास ने अपने उद्घाटन भाषण में गांवों में अपनाए जा रहे व्यवसायों द्वारा समुदाय में पैदा किए गए मूल्यों का जिक्र करते हुए पूछा।

डॉ. एलिजाबेथ गंगमेई, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग आर.आई.ई.बी. द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तावित किया गया था। उन्होंने प्रोफेसर एस.के. दास को उनके प्रासंगिक और हालांकि उत्तेजक विचारों के लिए धन्यवाद दिया कि हमें अपनी संस्कृति और उनके सभी अनुभवों के लिए गहराई से कैसे जड़ें जमाने की आवश्यकता है। उन्होंने एक जीवंत, व्यावहारिक और एक बहुत ही प्रेरक भाषण के लिए अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. को धन्यवाद दिया, जिसने उन्हें अपने समुदाय की याद दिला दी- कि कैसे वे कम या कम शिक्षा के बावजूद अच्छा कर रहे हैं; और प्रतिभागियों को दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का औचित्य बताने के लिए।

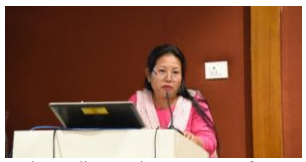

एम.जी.एन.सी.आर.ई. संसाधन व्यक्ति श्रीमती पद्मा जुलुरी ने प्रतिभागियों के साथ कौशल और क्षमता विकास के लिए योग्यता सीढ़ी चरणों को साझा किया और टीमों को अपने समूह के आउटपुट पर काम करना जारी रखने के लिए कहा।

विशेषज्ञ इनपुट: प्रत्येक भाषा वर्ग कक्षा में सीखी गई बातों का सारांश लेखन शामिल कर सकता है और पिछली कक्षा में सीखी गई बातों की बोलने की गतिविधि से शुरू कर सकता है। भाषा कौशल में सुधार के लिए व्याख्यानों को कम किया जाना है और अनुभवात्मक शिक्षण गतिविधियों जैसे एक्सटेम्पोर, जस्ट-ए-मिनट को शामिल किया जाना है।

"एन.ई.पी. ने व्यावसायिक शिक्षा को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया है। सरकार वोकल फॉर लोकल पर जोर दे रही है, हम इसे ग्लोबल मार्केट में ग्लोकल यानी लोकल के रूप में आगे ले जाना चाहेंगे। अनुभवात्मक अधिगम एक अवधारण डोमेन है। रटना सीखने से बहुत कम समझ मिलती है। अनुभवात्मक शिक्षा समझ देती है, इसके लिए व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण और पुनर्विचार बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को सशक्त बनाया जाना चाहिए और इसलिए शिक्षक शिक्षकों को भी सशक्त बनाने की आवश्यकता है" डॉ. पी.सी. अग्रवाल, प्राचार्य, आर.आई.ई., भुवनेश्वर ने कहा।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

एन.सी.ई.आर.टी. मैसूर 10-11 अगस्त

"एम.जी.एन.सी.आर.ई. चर्चा कर रहा है कि प्रत्येक पाठ्यक्रम में कौन से व्यावसायिक घटक को किस अध्याय में एकीकृत किया जा सकता है और यह समय की आवश्यकता है क्योंकि मैकाले की शिक्षा ने ज्ञान को महत्वपूर्ण घटक बना दिया था। प्रत्येक शिक्षक को एक व्यावसायिक शिक्षा शिक्षक बनना चाहिए" डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार, अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने कार्यशाला को गति प्रदान करते हुए कहा। सुश्री हरिता सुंदर, परियोजना अधिकारी एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने औपचारिक परिचय दिया, जबकि डॉ. डी.एन. दास, सहायक निदेशक एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने कार्यवाही का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि आर.आई.ई. मैसूर में कार्यक्रम की आयोजित करने के लिए एम.जी.एन.सी.आर.ई. के लिए यह एक शानदार अवसर था और एम.जी.एन.सी.आर.ई. की पृष्ठभूमि और इसके उद्देश्यों को साझा किया। **मुख्य अतिथि, प्रोफेसर याज्ञमूर्ति श्रीकांत, प्राचार्य, आर.आई.ई. मैसूर** ने अपने उद्घाटन में कहा, *"स्कूलों में, छात्रों दिल से सीखने में बहुत कम समय बिताते हैं। आर.आई.ई. में, हम इसे लंबी इंटर्नशिप के माध्यम से करने का प्रयास करते हैं। पारंपरिक बनाम व्यावसायिक, पाठ्यचर्या बनाम सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों जैसे अलगाव भी कुछ असुविधा पैदा कर रहे हैं। एक कृषि स्नातक भी खेती में वापस जाने के बजाय डेस्क जॉब करना चाहता है। कौशल को देखने के दो तरीके हैं- एक जो आप हाथों से करते हैं और कौशल जो आप अपने अनुभव (जीवन कौशल) से प्राप्त करते हैं - दोनों हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके बिना, दुनिया का सामना करना मुश्किल होगा क्योंकि कई नौकरियां गायब हो रही हैं।"*

डॉ. जी. विश्वनाथप्पा, प्रमुख, विस्तार शिक्षा विभाग, आर.आई.ई. मैसूर ने कहा, *"व्यावसायिक शिक्षा शिक्षक तैयारी कार्यक्रम हैं और कार्य कौशल को एकीकृत करने की आवश्यकता है। आर.आई.ई.एम. ने विश्वेश्वरैया तकनीकी विश्वविद्यालय के साथ-साथ पॉलिटेक्निक के साथ भागीदारी की है। अनुभवात्मक शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है - कोल्ब का मांडल उसी की बात करता है और कौशल की योग्यता सीधे से संबंधित है। इन दो दिनों में हम इस बात पर विचार करेंगे कि हम शिक्षा के पाठ्यक्रमों में कौशल को कैसे एकीकृत कर सकते हैं।"* **प्रो. वी. चंद्रन्ना, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग आर.आई.ई.एम.** *द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तावित किया गया था। उन्होंने कहा, "हम इस सहयोगी कार्यशाला को पाकर खुश हैं क्योंकि कौशल विकास के पहलू में शिक्षा के लिए काम करने का यह विचार भी हमारी चिंता का विषय है। यह हमारे द्वारा प्रदान किए जाने वाले सभी पाठ्यक्रमों के हमारे पाठ्यक्रम का एक मुख्य भाग है। एक शिक्षक को न केवल शिक्षाशास्त्र का ज्ञान होना चाहिए बल्कि अध्यापन का कौशल भी होना चाहिए। हमारी शिक्षा में मैनुअल कौशल का एक बड़ा अंतर है।" श्रीमती पद्मा जुलुरी, संसाधन व्यक्ति एम.जी.एन.सी.आर.ई., परियोजना अधिकारी, ने समूहों के गठन की सुविधा प्रदान की और व्यक्तिगत और समूह कार्यों का मिलान किया।*

शिक्षक शिक्षा में कौशल पर छात्रों के साथ अनौपचारिक चर्चा

कौशल में अवलोकन, प्रयोग, मृदा परीक्षण, समय और ऋतुओं में परिवर्तन का प्रभाव, ऋतुओं की सूची, प्रभाव, संरक्षण और परिरक्षण, समस्याओं की पहचान, व्यक्तिगत प्रभावों की सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, निर्णय लेने के कौशल समस्या समाधान, नेतृत्व, टीम प्रबंधन, संचार कुछ ऐसे कौशल थे जिन्हें संकाय द्वारा समुदाय की जरूरतों को पूरा करने के लिए छात्रों में विकसित करने की सिफारिश की गई थी। प्रतिभागियों ने 2 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के बारे में अपने विचार साझा किए और कहा कि "कौशल" अब उनमें समा गया है। सभी प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 05-06 अगस्त

डॉ. दिनेश प्रसाद सकलानी, निदेशक एन.सी.ई.आर.टी., राष्ट्रीय कार्यशाला के मुख्य अतिथि ने प्रतिभागियों को याद दिलाया, जो जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और दिल्ली कि व्यावसायिक शिक्षा एनईपी 2020 का एक प्रमुख घटक है और इसका 75% हिस्सा बुनियादी शिक्षा की वर्धा योजना है जैसा कि गांधीजी ने 1937 में प्रतिपादित किया था। डॉ. सकलानी ने कहा कि भारत 2050 तक सबसे युवा राष्ट्र होगा और हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि युवा कुशल हैं और इस कौशल अवसर का भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. के अध्यक्ष डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार ने कहा, *"हम रास्ते से हट गए और अब एन.ई.पी. 2020 का उपयोग करके इस पर वापस जाने की जरूरत है।" "एम.जी.एन.सी.आर.ई. अनुसंधान का समर्थन करता है - कक्षा से नवीनतम क्षेत्र का अनुभव। लघु अनुसंधान परियोजनाएं और प्रमुख अनुसंधान परियोजनाएं पाठ्यक्रम में सुधार के लिए उपयोगी हैं, ऐसी कोई भी शोध परियोजना जिसे बी.ओ.एस. द्वारा प्रायोगिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, सामुदायिक व्यस्तता या कौशल विकास के क्षेत्रों में डाइट/बी.एड. कॉलेजों में या स्कूली छात्रों के लिए अनुमोदित किया गया है, एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा समर्थित हो"* अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने कहा। इससे पूर्व मुख्य अतिथि को प्रशंसा के प्रतीक के रूप में गमले में लगा पौधा भेंट किया गया। स्वागत भाषण डॉ. डी.एन. दास, सहायक निदेशक, एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा दिया गया और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनिल कुमार दबे, क्षेत्रीय व्यावसायिक शिक्षा प्रकोष्ठ समन्वयक, एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा दिया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती पद्मा जुलुरी, संसाधन व्यक्ति एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा किया गया।

पहचान: विभिन्न रोग, उपचार के लिए विभिन्न जड़ी-बूटियां, व्यक्ति (चिकित्सक), साक्षात्कार कौशल, प्रश्नावली निर्माण, एक प्रश्नावली का प्रशासन, प्रलेखन, योग और ध्यान, ड्रिल और व्यायाम, प्राकृतिक चिकित्सा, खेल, बाल देखभाल, उपकरण सोर्सिंग, स्थान सोर्सिंग, संसाधन प्रबंधन, शैक्षिक महत्व के स्थानों की पहचान, यूट्यूब, ब्लॉगर, ऑनलाइन सामग्री डिजाइनिंग, स्व-प्रबंधन कौशल, नेतृत्व, प्रशासनिक, सॉफ्ट स्किल्स, मार्गदर्शन और अकादमिक ऑडिट करने का कौशल प्रतिभागियों द्वारा अनुशंसित कुछ कौशल थे।

सभी प्रतिभागियों को अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. और डॉ. शरद सिन्हा, प्रमुख, शिक्षक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा भागीदारी का प्रमाण पत्र प्रस्तुत किया गया।

सामुदायिक व्यस्तता के अवसर एन.ई.पी. 2020 एफ.डी.सी. एम.जी.एन.सी.आर.ई. का मल्टीपल एंट्री मल्टीपल एग्जिट मॉड्यूल 19-20 अगस्त

2 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में प्रतिभागियों के रूप में क्षेत्रीय समन्वय संस्थानों (आर.सी.आई.) के उन्नत भारत अभियान (यू.बी.ए.) समन्वयक शामिल थे। उन्होंने विभिन्न स्तरों पर सामुदायिक व्यस्तता के विस्तार, मानकीकरण और सुधार के लिए रणनीतियों पर विचार-विमर्श किया। राष्ट्रीय कार्यशाला ने एन.ई.पी. 2020 द्वारा प्रस्तावित मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एक्जिट मॉडल के संदर्भ में सामुदायिक व्यस्तता पाठ्यक्रम की मुख्य विशेषताओं और एकीकरण पर काम किया, जिसमें 1 वर्ष सर्टिफिकेट प्रोग्राम, 2 वर्ष का डिप्लोमा प्रोग्राम, 3 वर्ष का डिग्री प्रोग्राम, 4 वर्ष का ऑनर्स प्रोग्राम और 1 वर्ष एम.बी.ए. प्रोग्राम शामिल है। संकाय को कम्युनिटी एंगेजमेंट स्टूडेंट्स के लिए एंटरप्रेन्योरियल और रोजगार के अवसरों पर ज्ञान और व्यावहारिक सत्रों से परिचित कराया गया - सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और डिग्री लेवल, मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एक्जिट मॉडल, संकाय विकास और माइनर / मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट्स के संदर्भ में कम्युनिटी एंगेजमेंट के अवसर। सामुदायिक जुड़ाव, और सामुदायिक जुड़ाव के अवसर - एकाधिक प्रवेश और एकाधिक निकास मॉडल।

मुख्य अतिथि प्रो. वीरेंद्र कुमार विजय, राष्ट्रीय समन्वयक, उन्नत भारत अभियान ने सामुदायिक व्यस्तता अवसरों पर क्षेत्रीय समन्वय संस्थानों के क्षेत्रीय समन्वयकों को संबोधित किया। उन्होंने प्रतिभागियों से सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देने और यू.बी.ए. की जिम्मेदारियों को आगे बढ़ाने का आग्रह किया।

अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने छात्रों के लिए रोजगार के अवसर, प्रशिक्षकों की क्षमता निर्माण, चिकित्सकों से सीखने के रास्ते, सामाजिक जिम्मेदारी के साथ एकीकरण और ग्रामीण प्रबंधन पर बात की। उन्होंने जोर देकर कहा कि अर्थपूर्ण और शिक्षा मानव निर्माण, जीवनदायिनी और सुधारात्मक इमारत होनी चाहिए।

प्रतिभागियों को आई.सी.ए.आर.-राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंधन अकादमी (नार्म) के क्षेत्र के दौरे के लिए ले जाया गया। अकादमी शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों, विस्तार कर्मियों, विद्वानों और अन्य हितधारकों के लिए विभिन्न क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करती है और नवाचार के लिए व्यक्तिगत और संस्थागत क्षमता को बढ़ाने का प्रयास करती है।

डॉ. श्रीनिवास राव, निदेशक नार्म ने नार्म के साथ काम करने के अवसरों और उच्चतर शिक्षण संस्थानों के साथ संभावित सहयोगी परियोजनाओं पर चर्चा की। डॉ. एस. सेंथिल विनायगम ने विभिन्न उच्चतर शिक्षण संस्थानों के छात्रों और संकायों सहित विभिन्न कृजीधारकों से जुड़े उद्यमिता विकास और कृषि-व्यवसाय प्रबंधन स्टार्टअप पर प्रतिभागियों को संबोधित किया। डॉ. लक्ष्मण ने हरित परिसर की पहल पर प्रतिभागियों के साथ बातचीत की और परिसर के अंदर उनके पास उपलब्ध प्रजातियों की विभिन्न किस्मों को दिखाया। डॉ. अनीजा ने एच.ई.आई. से जुड़े सामुदायिक व्यस्तता में विभिन्न अवसरों पर चर्चा की।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. टीम ने जे.एन.टी.यू.एच. के संबद्ध कॉलेजों और यू.बी.ए. पी.आई. के संकाय के लिए 'सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक व्यस्तता की सुविधा' पर आगामी 6-दिवसीय एफ.डी.पी. के बारे में **डॉ. एम. मंजूर हुसैन, रजिस्ट्रार, जे.एन.टी.यू. हैदराबाद** से मुलाकात की।

संकाय विकास कार्यक्रम

'सामाजिक उत्तरदायित्व का मार्गदर्शन करना और सामुदायिक व्यस्तता के लिए सुविधा'

एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने 6-दिवसीय संकाय विकास की शुरुआत की है सामुदायिक व्यस्तता के लिए सामाजिक उत्तरदायित्व और सुविधा के परामर्श पर कार्यक्रम'। एफ.डी..पी में भारत में उच्चतर शिक्षा संस्थानों के प्रतिभागियों के रूप में संकाय हैं जो संस्थागत सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा देने वाले अपने नेतृत्व कौशल के माध्यम से अपने संस्थान में नवीन परिवर्तन लाने के इच्छुक हैं। नवाचार बढ़ते संगठनों का एक महत्वपूर्ण गुण है। बढ़ते संगठनों को संगठित ग्रूमिंग सपोर्ट की जरूरत है। यहीं पर मेंटरिंग मदद करती है। मेंटरिंग एक पेशेवर गतिविधि है, एक भरोसेमंद रिश्ता है, एक सार्थक प्रतिबद्धता है। सुविधा कौशल "प्रक्रिया" कौशल हैं जिनका उपयोग लोगों के समूहों के साथ काम के आयोजन के प्रमुख भागों को निर्देशित करने और निर्देशित करने के लिए किया जा सकता है जैसे कि बैठकें, योजना सत्र, और सदस्यों और टीम के नेताओं का प्रशिक्षण। मेंटरिंग ग्रूमिंग की दक्षताओं का निर्माण करती है। ग्रूमिंग एक वैचारिक पाठ्यपुस्तक का काम नहीं है बल्कि तकनीकी और अभ्यास उन्मुख है। सुविधा निर्णय लेने और कौशल और दक्षताओं को बढ़ाने में मदद करती है। संस्थागत और सिस्टम अपग्रेडेशन और अपडेशन के माध्यम से संस्थागत सामाजिक उत्तरदायित्व की भूमिका निभाने के लिए संस्थानों के संकाय सदस्यों को तैयार करने के लिए एक सतत संस्थागत प्रयास की आवश्यकता है। इसके लिए विशाल संस्थागत परामर्श और सुविधा कौशल की आवश्यकता है। एफ.डी.पी. में एम.जी.एन.सी.आर.ई. का संचालन यू.जी.सी. एच.आर.डी.सी. विश्वविद्यालयों के साथ-साथ अन्य संस्थानों के साथ अपने विशेषज्ञ संसाधन व्यक्तियों के माध्यम से कर रहा है। एफ.डी.पी. में फील्ड (गांव) के दौरे के साथ-साथ इन-हाउस अनुभवात्मक शिक्षण सत्र शामिल थे, जिसमें भूमिका निभाने वाले संकाय, समूह चर्चा, केस चर्चा, अनुभव साझा करना, पी.पी.टी. प्रस्तुतियों के साथ समस्या समाधान शामिल थे।

संकाय विकास कार्यक्रमों की झलक

यू.जी.सी.-एच.आर.डी.सी. रानी दुर्गावती विश्व विद्यालय (आर.डी.वी.वी.) जबलपुर, एम.पी. 1-6 अगस्त

एफ.डी.पी. में आर.डी.वी.वी. के निदेशक प्रो राजेश्वरी राणा और आर.डी.वी.वी.वी. के पूर्व निदेशक डॉ. कमलेश मिश्रा सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। डॉ. राजेश्वरी राणा ने कार्यक्रम के उद्देश्यों और सतत विकास में प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी के बारे में जानकारी दी और छात्र केंद्रित शिक्षण और सीखने की शिक्षा पर प्रकाश डाला। समापन सत्र के मुख्य अतिथि आर.डी.वी.वी. के कुलपति डॉ. कपिलदेव मिश्रा थे। उन्होंने एम.जी.एन.सी.आर.ई. की अनूठी एफ.डी.पी. की सराहना की। एफ.डी.पी. के अंत में प्रमाण पत्र दिए गए। श्रीमती सुप्रिया बेतिया, परियोजना समन्वयक, एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा समन्वित ग्राम भ्रमण ग्राम किसरोद, तहसील जबलपुर का किया गया। सभी संकायों को 5 समूहों में वर्गीकृत किया गया था - शिक्षा, कृषि, एस.एच.जी. और उद्यमिता, जागरूकता (ग्रामीण विकास कार्यक्रम)। गांव के दौरे के बाद समूहों ने अपनी सीख साझा की।

यू.जी.सी. एच.आर.डी.सी. देवी अहिल्या विश्वविद्यालय (डी.ए.वी.वी.), इंदौर एम.पी.

1-6 अगस्त

प्रो. अशोक शर्मा, रेक्टर, डी.ए.वी.वी. और डॉ. नम्रता शर्मा, निदेशक, डी.ए.वी.वी. ने औपचारिक रूप से एफ.डी.पी. का उद्घाटन किया। डॉ. ओ.पी. द्विवेदी, लाइफ कोच, मास्टर ट्रेनर, डी.ओ.पी.टी., भारत सरकार ने मेंटरिंग, लर्निंग एंड डेवलपमेंट पर सत्र लिया।

ग्रामीण परिवेश, ग्रामीण चुनौतियों और उपलब्ध संसाधनों का अवलोकन और अध्ययन करने के लिए संकाय

ने मोरोद गांव का दौरा किया। समूह ने गाँव के सरपंच से बातचीत की जिन्होंने गाँव की समग्र तस्वीर संक्षेप में दी।

बनस्थली विद्यापीठ अलीयाबाद, राजस्थान 3- 8 अगस्त

कार्यक्रम में 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागी जयपुर, देहरादून, नोएडा, निवाई, टोंक, कोटा, भरतपुर, अलवर, नोएडा, सवाई माधोपुर, राजसमंद के विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों से थे और बाकी बनस्थली विद्यापीठ से थे। मुख्य अतिथि **डॉ. इना शास्त्री, कुलपति बनस्थली विद्यापीठ** थीं। उन्होंने संकाय से एफ.डी.पी. के दौरान सीखी गई बातों का अभ्यास करने का आग्रह किया। सामाजिक विज्ञान विभाग के पूर्व प्रमुख प्रो. एस.सी. राजोरा ने ज्ञान प्राप्त करने और उसके अनुप्रयोग के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलू के बारे में बताया। इसके अलावा एफ.डी.पी. में मूल्य जोड़ने वाले निदेशक, डॉ. अजय सुराणा, डॉ. वंदना शर्मा, मुख्य समन्वयक, और डॉ. मल्लिका शेखर, आयोजन सचिव थे। गांव, पलाई का फील्ड ट्रिप किया गया और अगले दिन गांव के दौरे की डीब्रीफिंग की गई।

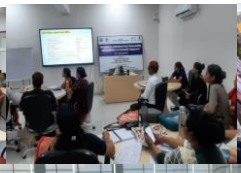

यू.जी.सी. एच.आर.डी.सी. बैंगलोर विश्वविद्यालय बेंगलुरु कर्नाटक

16-22 अगस्त

डॉ. जयकारा एस.एम., कुलपति, बैंगलोर विश्वविद्यालय, **प्रो. वाई. एस. सिद्देगौड़ा**, कुलपति, तुमकुर विश्वविद्यालय सम्मानित अतिथि थे। प्रो. सी. श्रीनिवास, निदेशक, यू.जी.सी.-एच.आर.डी.सी., बैंगलोर विश्वविद्यालय, डॉ नीमा ज्ञानदेव, एसोसिएट प्रोफेसर, ग्रामीण विकास अध्ययन केंद्र, बैंगलोर विश्वविद्यालय मुख्य वक्ता थे, जबकि प्रो अरुण एस वैद्य, सहायक प्रोफेसर, बैंगलोर विश्वविद्यालय, संकाय विकास कार्यक्रम के संयोजक थे। बैंगलोर विश्वविद्यालय से 34 किलोमीटर दूर कनकपुरा रोड पर एक गांव रावू गोडलू में दो समन्वयकों के साथ 22 सदस्यों के साथ एक फील्ड विजिट का आयोजन किया गया था।

यू.जी.सी. एच.आर.डी.सी. गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी असम 22-27 अगस्त

प्रो. श्यामंत चक्रवर्ती निदेशक (प्रभारी) यू.जी.सी. एच.आर.डी.सी., गुवाहाटी विश्वविद्यालय ने एफ.डी.पी. का उद्घाटन किया। उन्होंने कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एम.जी.एन.सी.आर.ई. को धन्यवाद दिया और शिक्षकों से सीख साझा करने का आग्रह किया। प्रख्यात शिक्षाविदों को संसाधन व्यक्तियों के रूप में आमंत्रित किया गया था जिन्होंने सभी 6 दिनों में सत्र दर सत्र लिया। पटगांव गांव में फील्ड ट्रिप आयोजित की गई जहां संकाय टीमों ने जानकारी एकत्र की और पी.आर.ए. तकनीकों का इस्तेमाल किया।

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर पंजाब 22-27 अगस्त

मुख्य अतिथि प्रो. (डॉ.) हरदीप सिंह, कुलपति जी.एन.डी.यू. के ओ.एस.डी. ने छात्रों की ताकत बढ़ाने के लिए महिलाओं की शिक्षित करने और नवीन पद्धतियों के माध्यम से शिक्षा के अनुकूल वातावरण बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उच्चतर शिक्षा के स्कूल और संस्थान।

गांव खपर खीरी का दौरा किया गया जहां ग्रामीणों के जीवन का अध्ययन करने के लिए पूरा दिन बिताया गया।

शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर 22-27 अगस्त

डॉ. डी.टी. शिर्के कुलपति शिवाजी विश्वविद्यालय और डॉ. एस.पी. रथ निदेशक छत्रपति शाहू इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस एजुकेशन एंड रिसर्च (सी.एस.आई.बी.ई.आर.), कोल्हापुर विशिष्ट अतिथि थे। संकाय ने एफ.डी.पी. के फील्ड विजिट के हिस्से के रूप में परिटे गांव का दौरा किया।

"वैश्वीकरण, ज्ञान समाज, नवाचार, प्रौद्योगिकियों का विकास, बाजार की ताकतों पर बढ़ता जोर शैक्षिक संस्थानों को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में से हैं" प्रो शिर्के ने कहा।

मुंबई विश्वविद्यालय मुंबई

22-27 अगस्त

वकील धनश्री चौगले प्राचार्य, बी.सी.ठाकुर लॉ कॉलेज, पनवेल और प्रो. (डॉ.) सुनीता मागरे प्रोफेसर और प्रमुख, शिक्षा विभाग, अध्यक्ष, मुंबई शिक्षा विश्वविद्यालय में अध्ययन बोर्ड सम्मानित अतिथि थे। शिक्षकों ने शिवकर गांव का दौरा किया और पी.आर.ए. आयोजित किया।

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद्

उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

5-1-174, शक्कर भवन, फतेह मैदान रोड, बशीरबाघ, हैदराबाद, तेलंगाना - 500004

दूरभाष: 040-23212120, फैक्स: 040-23212114, ई-मेल: admin@mgncre.in, वेबसाइट: www.mgncre.org

संपादक: डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार, अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई., डॉ.डी.एन.दास, सहायक निदेशक, अनसूया.वी, संपादक

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद् (एम.जी.एन.सी.आर.ई.) की ओर से डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार, अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा प्रकाशित और मुद्रित

RNI NO: TELENG/2021/81111